हॉर्टन ने अंडा सेया

डॉ. जॉयस

अंडे सेते हुए आलसी चिड़िया मेज़ी ने आह भरी:
"मैं थक गई हूं और मैं ऊब गई हूं
मेरे पैर अब ऐंठ गए हैं
मुझे दिन-ब-दिन यहीं बैठे रहना पड़ता है.
यही मेरा काम है! मुझे उससे बेहद नफरत है!
मुझे खेलना बहुत पसंद है!
मैं एक छुट्टी लूंगी, और आराम करने के लिए उड़ जाऊंगी
अगर मुझे अपने घोंसले पर बैठने के लिए कोई मिल जाए!
यदि मुझे कोई मिल गया, तो फिर मैं मुक्त होकर उड़ जाऊँगी.....

तभी हॉर्टन नामक हाथी उस चिड़िया के पेड़ के पास से गुजरा.
"नमस्ते!" आलसी चिड़िया ने कहा. वह खूब मुस्कुरा रही थी,
"देखो, तुम्हारे पास करने को कुछ नहीं है और मुझे आराम की ज़रूरत है.
क्या तुम मेरे घोंसले में अंडे पर बैठोगे?"

हाथी हँसा.
"तुम क्यों, ऐसी मूर्खतापूर्ण बातें करती हो!
देखो, मेरे पंख नहीं हैं, मेरे डैने तक नहीं हैं.
मैं तुम्हारे अंडे पर बैठूं? फालतू, इसका कोई मतलब नहीं है. . .
तुम्हारा अंडा बहुत छोटा है, बहन, और मैं बहुत बड़ा हूँ!"
"चुप रहो," मेज़ी ने उत्तर दिया.
"मुझे मालूम है तुम छोटे नहीं हो
लेकिन मुझे लगता है कि तुम वो कर पाओगे.
तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी.
बस तुम अंडे पर धीरे से बैठना.
तुम वैसे भी बहुत सौम्य और दयालु हो.
आओ, मेरे अच्छे दोस्त, मुझे पता है कि तुम बुरा नहीं मानोगे."
"मैं नहीं कर सकता," हाथी ने कहा.
"प्लीज!" चिड़िया ने विनती की.
"सर, मैं बहुत देर के लिए नहीं जाऊँगी.
मैं तुम्हें अपना वचन देती हूँ.
मैं तुरंत वापस आऊंगी.
देखना, मैं बहुत जल्दी लौटूंगी..."

"बहुत अच्छा," हाथी ने कहा, "चूंकि तुम इतना जोर दे रही हो...
क्योंकि तुम छुट्टी चाहती हो. चलो उड़ जाओ और मस्ती करो.
मैं तुम्हारे अंडे पर बैठूंगा और कोशिश करूंगा कि वो टूटे नहीं.
मैं बैठूंगा और वफादार रहूंगा. मैंने जो कहा, वही करूंगा."
'बहुत शुक्रिया!' मेज़ी ने गाया और अपने पंख फड़फड़ाए.

"देखो...मुझे जो पहला काम करना है," हॉर्टन बुदबुदाया,
"चलो....
सबसे पहले मैं इस पेड़ को सहारा दूंगा
उसे और अधिक मजबूत बनाऊंगा. वो काम करना ही होगा
तभी पेड़ मेरा एक टन का वज़न सह पाएगा."

फिर ध्यान से,
कोमलता से,
वह धीरे से पेड़ के ऊपर सरका
तने से ऊपर उस घोंसले तक
जहाँ छोटा अंडा सोया था.

फिर हॉर्टन हाथी मुस्कुराया.
"अब सब ठीक है"
और फिर वो बैठा रहा
बैठा रहा
बैठा रहा
बैठा रहा......
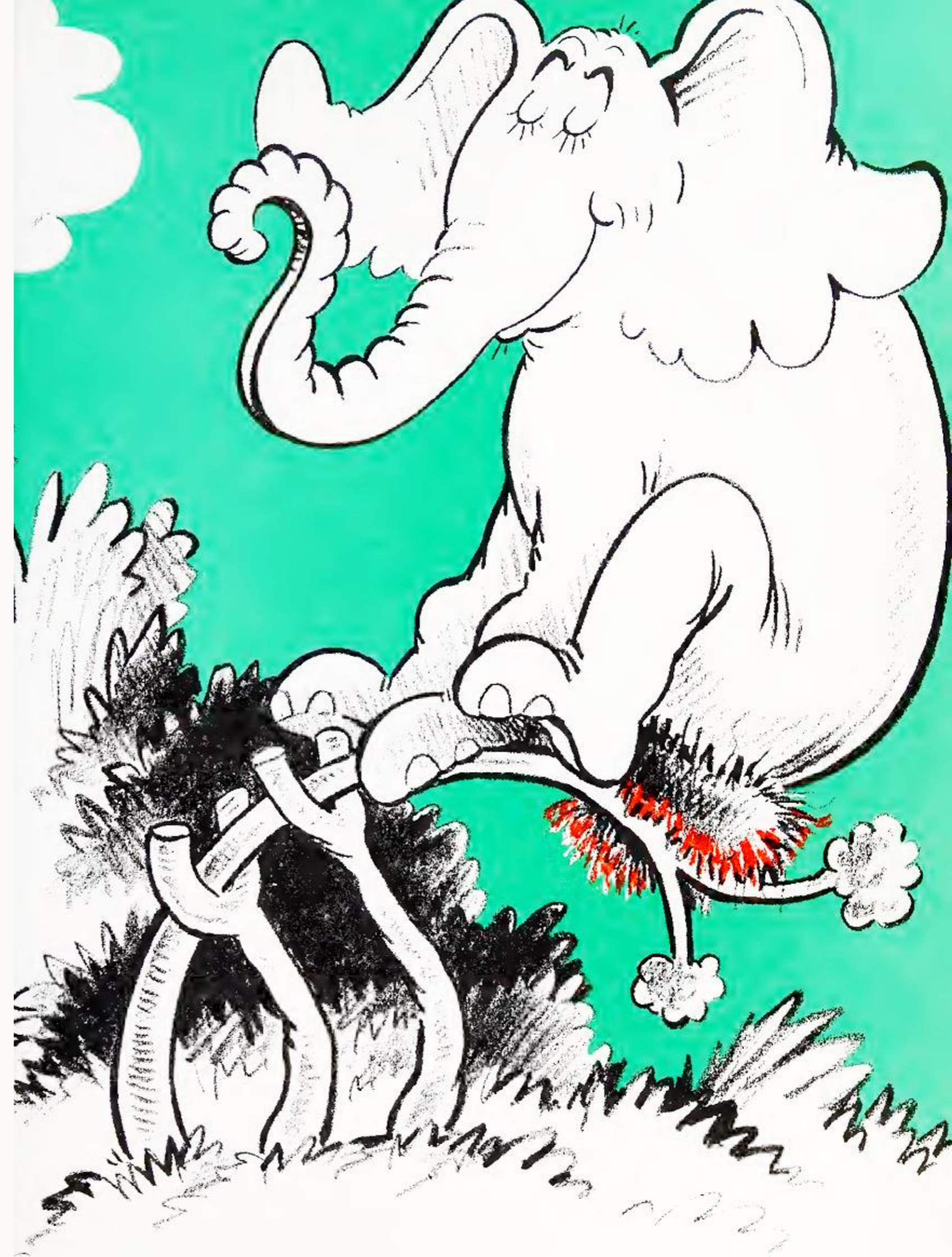
वो पूरे दिन बैठा रहा
उसने अंडे को गर्म रखा....
वो पूरी रात बैठा रहा
रात को एक भयानक तूफान आया
पानी बरसा, बिजली चमकी!
बादल गरजे! बिजली चमकी!
"इसमें कोई मज़ा नहीं है,"
बेचारा हाथी बड़बड़ाया.
"काश वो चिड़िया वापस आती
'क्योंकि मुझे ठंड लग रही है और मैं एकदम गीला हूँ.
मुझे आशा है कि मेज़ी चिड़िया अपना वादा नहीं भूलेगी."

लेकिन मेज़ी, तब तक, बहुत दूर उड़ चुकी थी,
वो समंदर के किनारे तट पर धूप का आनंद ले रही थी,
वो इतना मज़ा, इतना आराम कर रही थी,
कि उसने निर्णय लिया कि वो कभी भी
अपने घोंसले में वापस नहीं लौटेगी!

इसलिए हॉर्टन दिन-ब-दिन वहीं बैठा रहा.
और जल्द ही शरद ऋतु आ गई. पत्तियाँ उड़ने लगीं.
और फिर सर्दी आई...बर्फ और ओले गिरे!
और हिमलंब लटके
उसकी सूंड और पैरों से.
परन्तु हॉर्टन वहीं बैठा रहा. वो छींकते हुए बोला,
"मैं इस अंडे पर बैठा रहूंगा और उसे जमने नहीं दूंगा.
मैंने काफी सोच समझकर
बिना लाग-लपेट के अपनी बात कही
और मैंने वही कहा, जो मुझे कहना था....
हाथी हमेशा वफादार होता है
एक सौ प्रतिशत!"
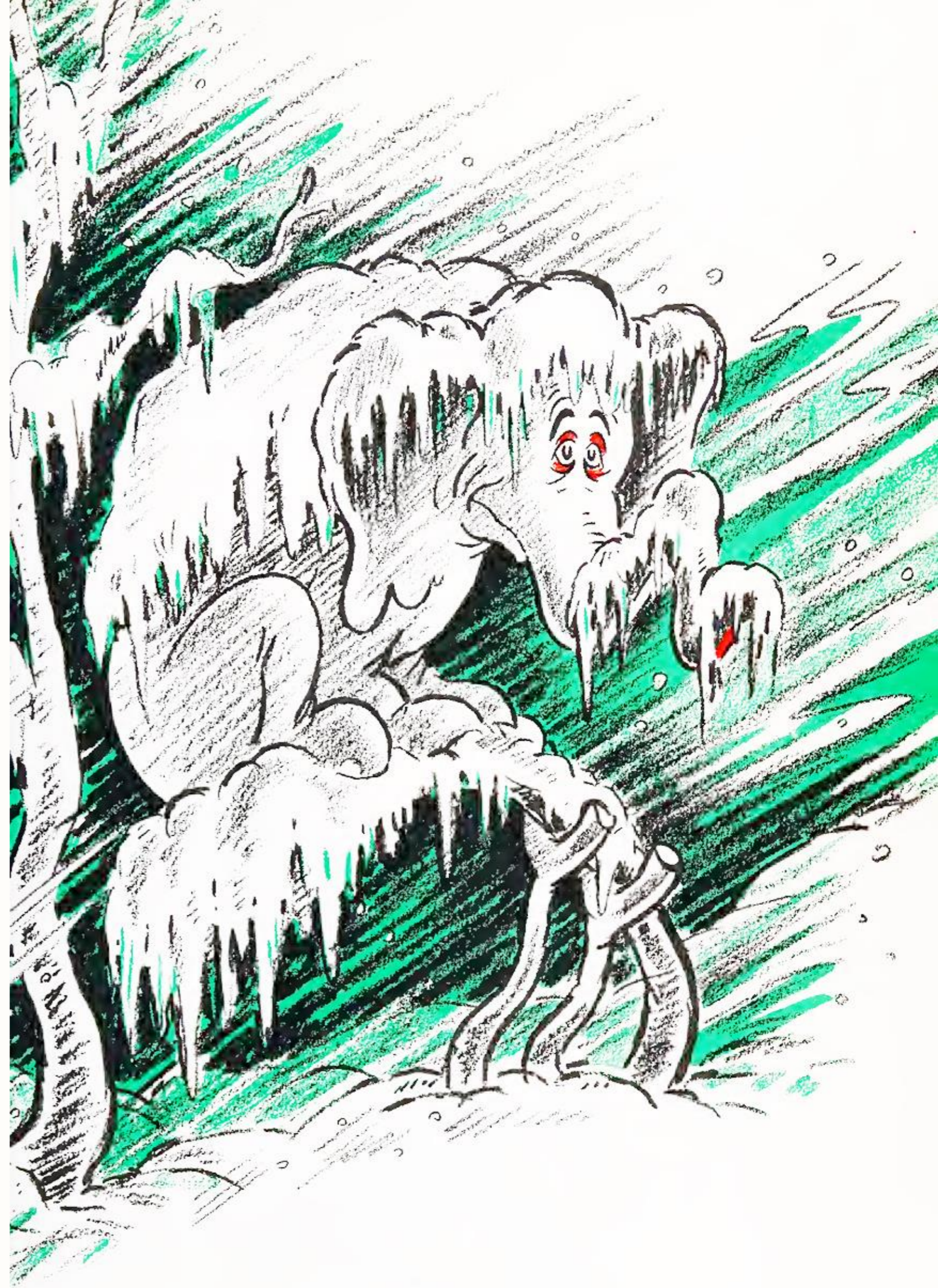
फिर बेचारा हॉर्टन वहीं बैठा रहा
सारी शीत ऋतु
उसके बाद वसंत ऋतु आई
नई मुसीबतों के साथ!
उसके दोस्त आसपास इकट्ठे हुए
और वे खुशी से चिल्लाए.

"देखो! हॉर्टन हाथी को
ऊपर उस पेड़ पर!"
उन्होंने ताना मारा. उन्होंने उसे चिढ़ाया.
उसकी खिल्ली उड़ाई!
वे चिल्लाए, "कितना बेतुकी बात है!"
"बूढ़ा हॉर्टन हाथी सोचता है
कि वो एक चिड़िया है!"

वे हँसे और वे हँसे. फिर वे सभी भाग गये.
और हॉर्टन अकेला रह गया. वह खेलना चाहता था.
लेकिन वह अंडे पर बैठा रहा और कहता रहा:
"मैंने काफी सोच समझकर
बिना लाग-लपेट के अपनी बात कही
और मैंने वही कहा, जो मुझे कहना था....
हाथी हमेशा वफादार होता है
एक सौ प्रतिशत!"

"चाहे जो हो जाये,
इस अंडे की देखभाल ज़रूर होनी चाहिए!"
लेकिन बेचारे हॉर्टन की मुसीबतें
ख़त्म होती नहीं दिखती थीं.
क्योंकि, जब हॉर्टन वहां बैठा था
इतना वफादार, इतना दयालु,
तब तीन शिकारी छुपते हुए
धीरे से, पीछे से वहां आए!

उसने शिकारियों की पदचाप सुनी!
हॉर्टन चौंककर पलटा!
तीन राइफलें तनी हुई थीं
सीधे उसके दिल की ओर!

क्या वह भागा?
बिल्कुल नहीं!
हॉर्टन वहीं घोंसले पर टिका रहा!
उसने अपना सिर ऊँचा उठाया
और उसने अपनी छाती बाहर निकाली
और उसने शिकारियों की ओर देखा
देखो, मुझे बस इतना कहना है:
"गोली मारनी है तो मारो
लेकिन मैं भागूंगा नहीं!
मैंने काफी सोच समझकर
बिना लाग-लपेट के अपनी बात कही
और मैंने वही कहा, जो मुझे कहना था....
हाथी हमेशा वफादार होता है
एक सौ प्रतिशत!"

लेकिन शिकारियों ने गोली नहीं चलाई!
हॉर्टन को बहुत आश्चर्य हुआ,
उन्होंने अपनी तीनों बंदूकें गिरा दीं
और वे फटी आँखों से उसे घूरने लगे!
"देखो!" वे सब चिल्लाये,
“अजीब दृश्य, कितनी नायाब बात है?
एक हाथी पेड़ के ऊपर बैठा हुआ..
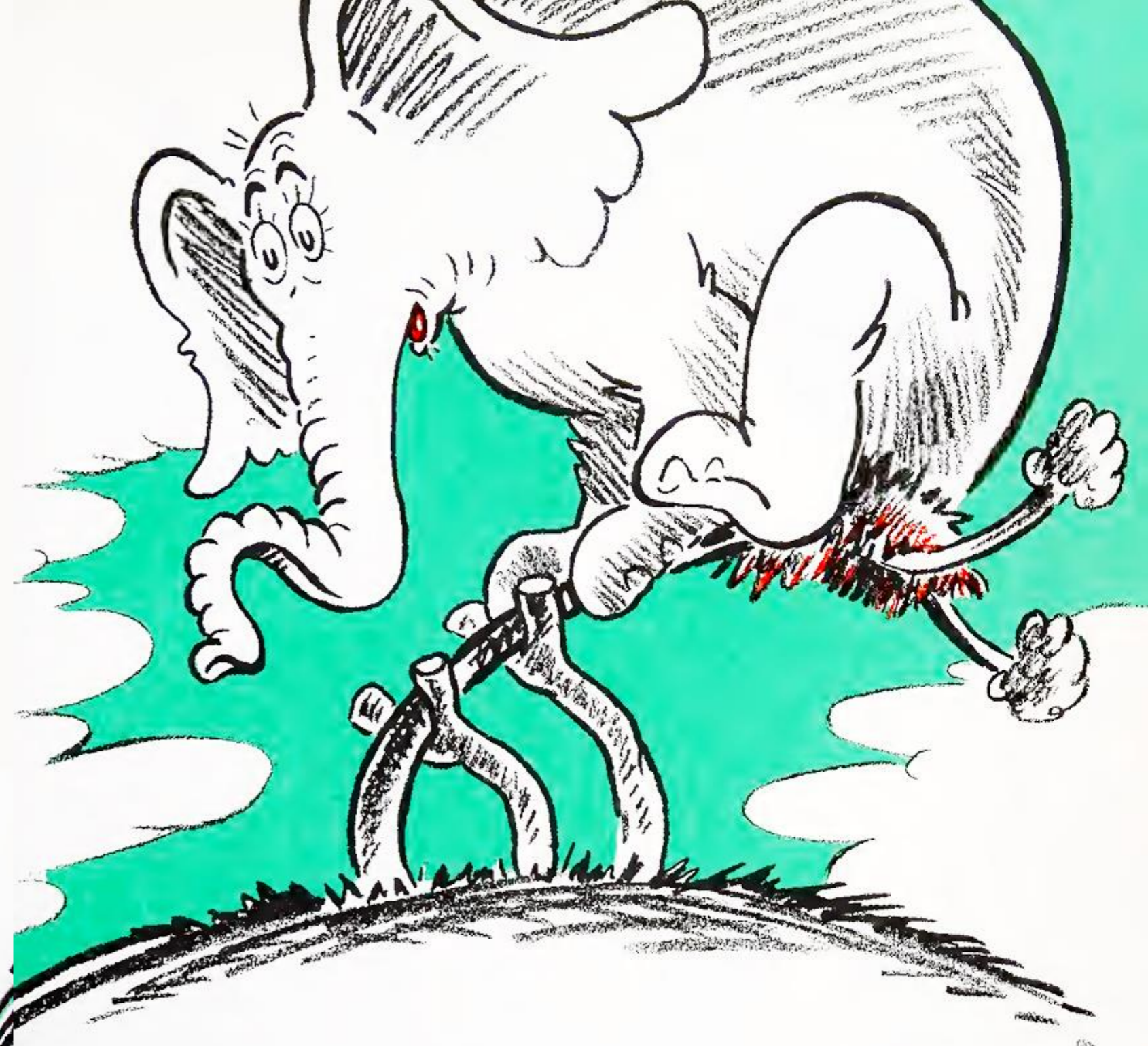
"यह अजीब है! यह अद्भुत है! यह नायाब है!
उसे गोली मत मारो. हम उसे पकड़ लेंगे.
हम बस यही करेंगे!
हम उसे जीवित पकड़ेंगे.
क्यों, यह कोई मज़ाक नहीं है!
हम उसे मुनाफे पर सर्कस को बेच देंगे!"
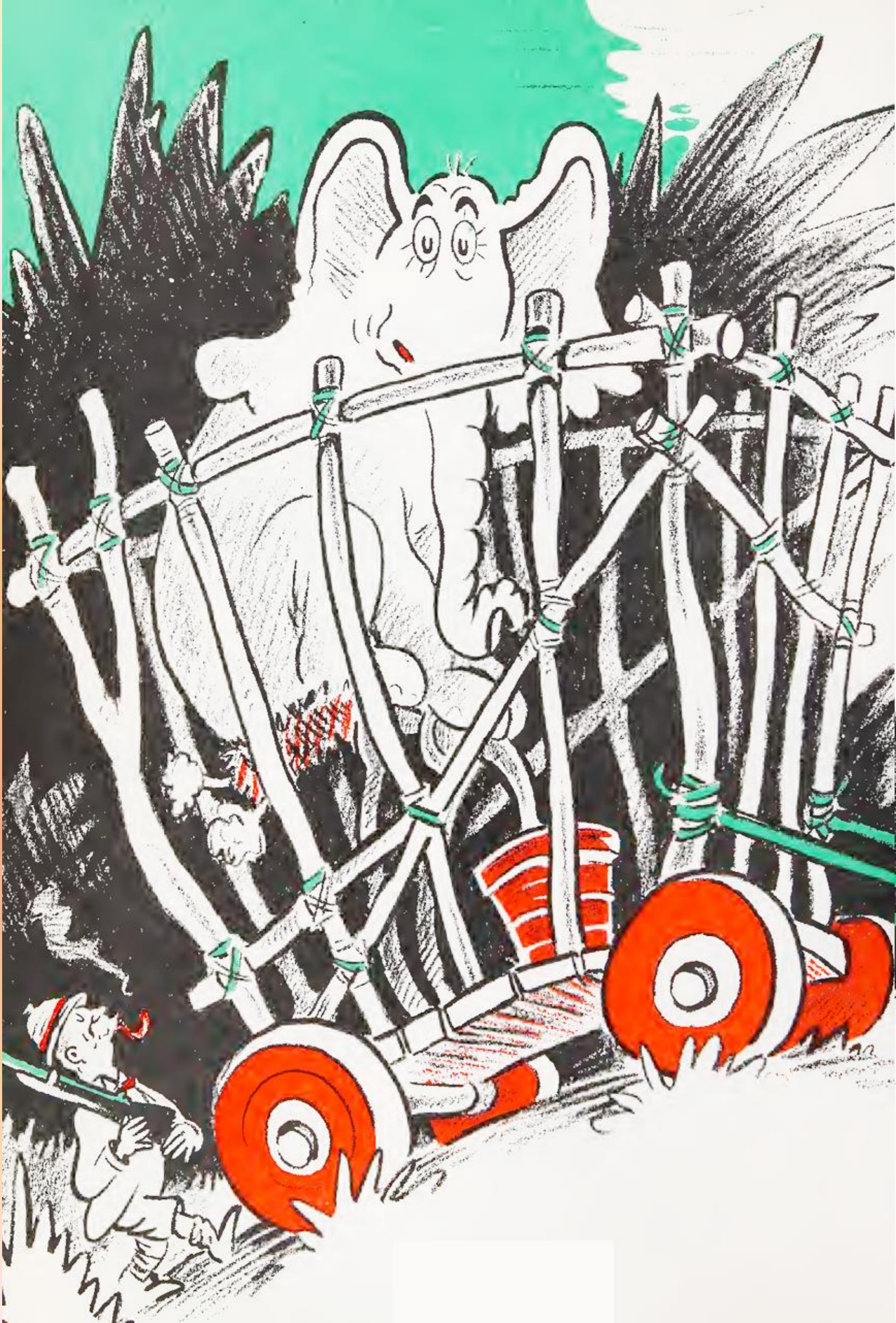
और पहली बात जो हॉर्टन ने देखी.
शिकारियों ने एक बड़ा वैगन बनाया
जिसमें खींचने के लिए सामने रस्सियां लटकी थीं.
फिर उन्होंने हॉर्टन के पेड़ को खोदा और उसे वैगन में लादा
बेचारा हॉर्टन इतना दुखी हुआ कि वह ज़ार-ज़ार रोया.
"खींचो!" शिकारी चिल्लाये. और फिर वे सब आगे बढ़े
लेकिन हॉर्टन नाखुश था, सौ फीसदी.

जंगल से बाहर! ऊपर आसमान में!
दस हजार फुट ऊँचे पहाड़ों के ऊपर!
फिर नीचे, पहाड़ों के नीचे
और नीचे समुद्र तक
हाथी के साथ वैगन लुढ़की,
अंडे, घोंसले और पेड़ के साथ...

फिर वैगन को
एक जहाज़ पर लादा!
समुद्र के पार...
अरे वो क्या यात्रा थी!
लुढ़कना और हिचकोले खाना और स्प्रे से भीगना!
और हॉर्टन ने कहा, दिन-ब-दिन:
"मैंने काफी सोच समझकर
बिना लाग-लपेट के अपनी बात कही
और मैंने वही कहा, जो मुझे कहना था....
लेकिन देखो, क्या मैं समुद्र में बीमार हूँ!
एक सौ प्रतिशत!"

दो सप्ताह तक कॉर्क की तरह इधर-उधर उछलने के बाद,
आख़िरकार वे न्यूयॉर्क शहर में उतरे.
"सभी तट पर!" शिकारी चिल्लाये,
और फिर झटके से नीचे
उन्होंने हॉर्टन हाथी को उतारा
अभी भी वो अपने आसन पर बैठा था,
वो एक ऐसे बोर्ड से बंधा हुआ था
जो मुश्किल से उसका भार संभाल पा रहा था. .. .
ठक्क!
हॉर्टन उतरा!
और फिर शिकारियों ने उसे बेच दिया!
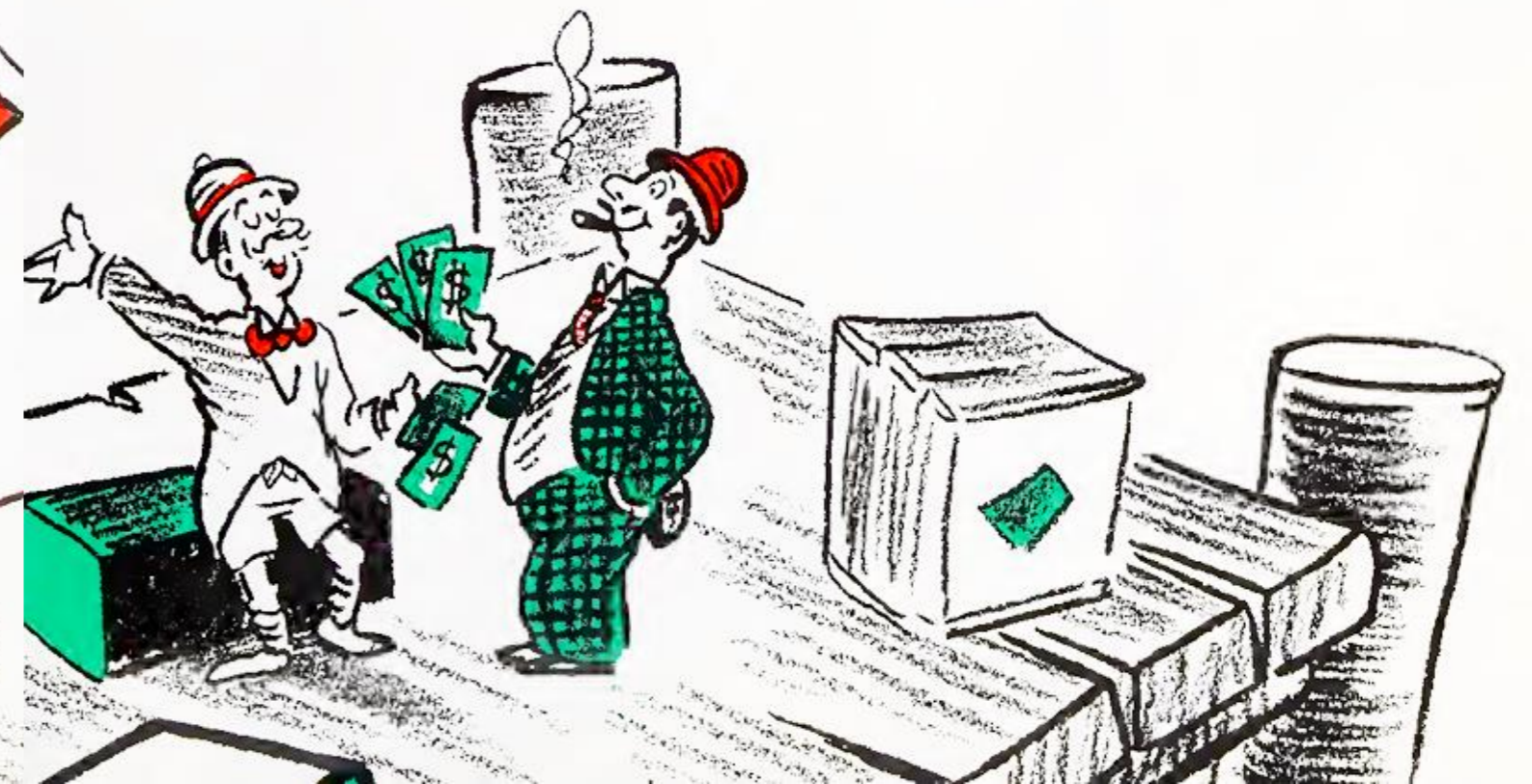
उन्होंने उसे एक सर्कस को बेच दिया!
फिर सप्ताह दर सप्ताह
सर्कस ने लोगों को दस सेंट में
हॉर्टन हाथी की झलक दिखलाई
वे उसे बोस्टन, कालामाज़ू, ले गये.
शिकागो, वेहौकेन और वाशिंगटन भी;
डेटन, ओहियो, सेंट पॉल, मिनेसोटा;
विचिटा, कंसास, ड्रेक, नॉर्थ डकोटा ले गए.
और हर जगह हजारों की संख्या में लोग
उसे देखने के लिए उमड़ पड़े
एक पेड़ पर चढ़े हाथी को देखकर लोग हंसे.
बेचारा हॉर्टन ने जितनी यात्रा की,
वो उतना ही और दुखी हुआ,
लेकिन जब वह गर्म शोर वाले तंबू में बैठा
तो उसने कहा:
"मैंने काफी सोच समझकर
बिना लाग-लपेट के अपनी बात कही
और मैंने वही कहा जो मुझे कहना था....
हाथी हमेशा वफादार होता है
एक सौ प्रतिशत!"

तब . . . एक दिन
सर्कस शो पहुँच गया
दक्षिण की ओर एक शहर, जो समुद्र तट से ज्यादा दूर नहीं था.
तभी आकाश में ऊँचे रास्ते पर डगमगाते हुए,
कौन आया?
वही बूढ़ी निकम्मी चिड़िया, भगोड़ी मेज़ी!
वो अभी भी छुट्‌टी पर थी और अभी भी उतनी ही आलसी थी.
फिर झंडों और तंबुओं के ठीक नीचे जासूसी करते हुए,
उसने गाया, "कितना मज़ा है! मैं शो में जरूर जाऊँगी!"

फिर उसने बादलों से नीचे गोता मारा
एक खुले तम्बू के दरवाजे के बीच से ...
"अरे बाप रे!" हाँफते हुए मेज़ी ने कहा,
"लगता है, मैंने तुम्हें पहले कभी देखा है!"

बेचारे हॉर्टन ने अपने चॉक जैसे सफ़ेद चेहरे को ऊपर उठाया!
उसने बोलना शुरू किया, लेकिन इससे पहले कि वो कुछ बोल पाता...

वहाँ सबसे शोरगुल वाली कानफोड़ू चीख गूँज उठी
उस अंडे से जिस पर वह इक्यावन सप्ताह तक बैठा था!
वो एक जोरदार धमाके से! एक टक्कर से! एक जंगली चीख से!
"मेरा अंडा!" हॉर्टन चिल्लाया. "मेरा अंडा! देखो, वो फूट रहा है!"
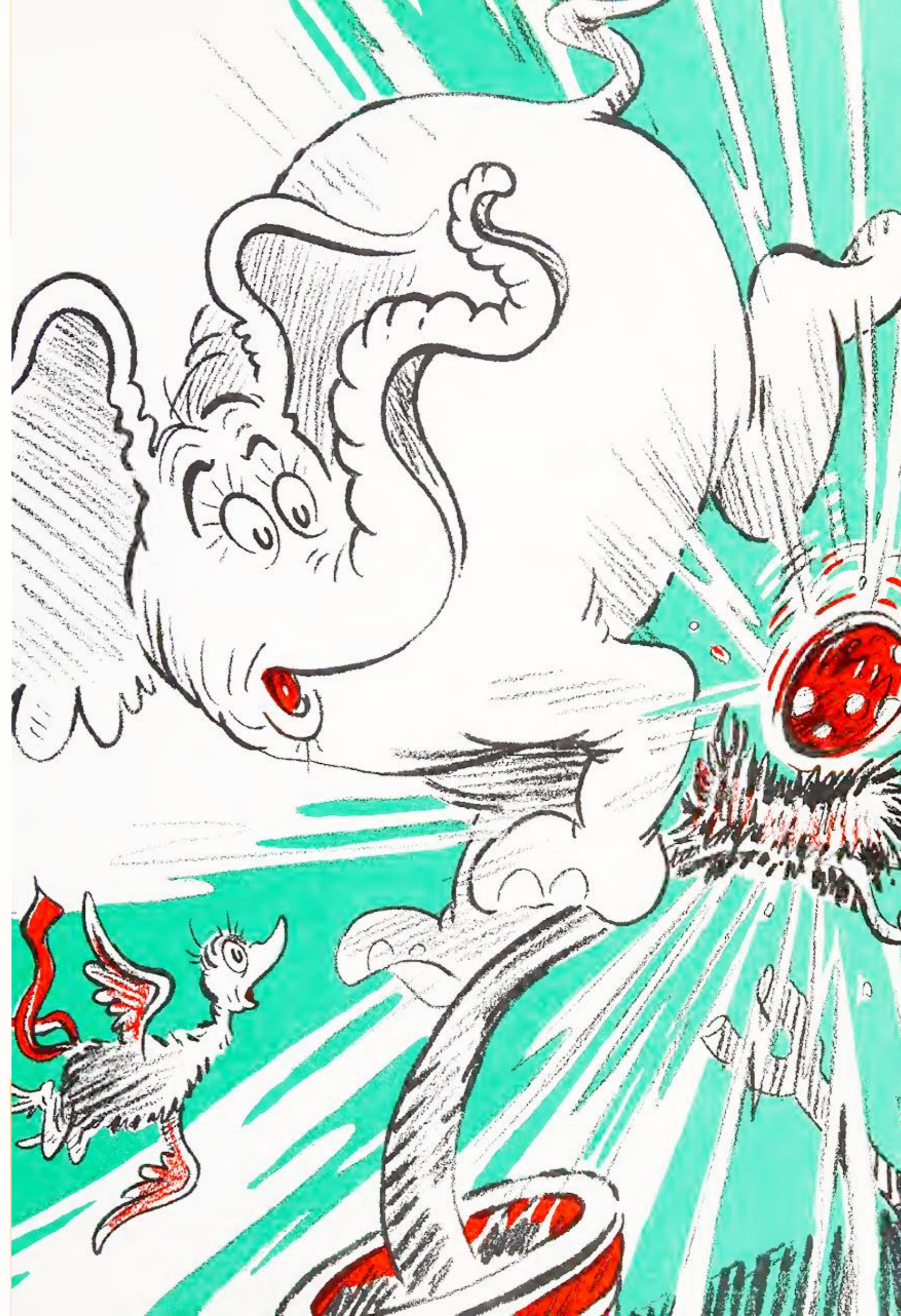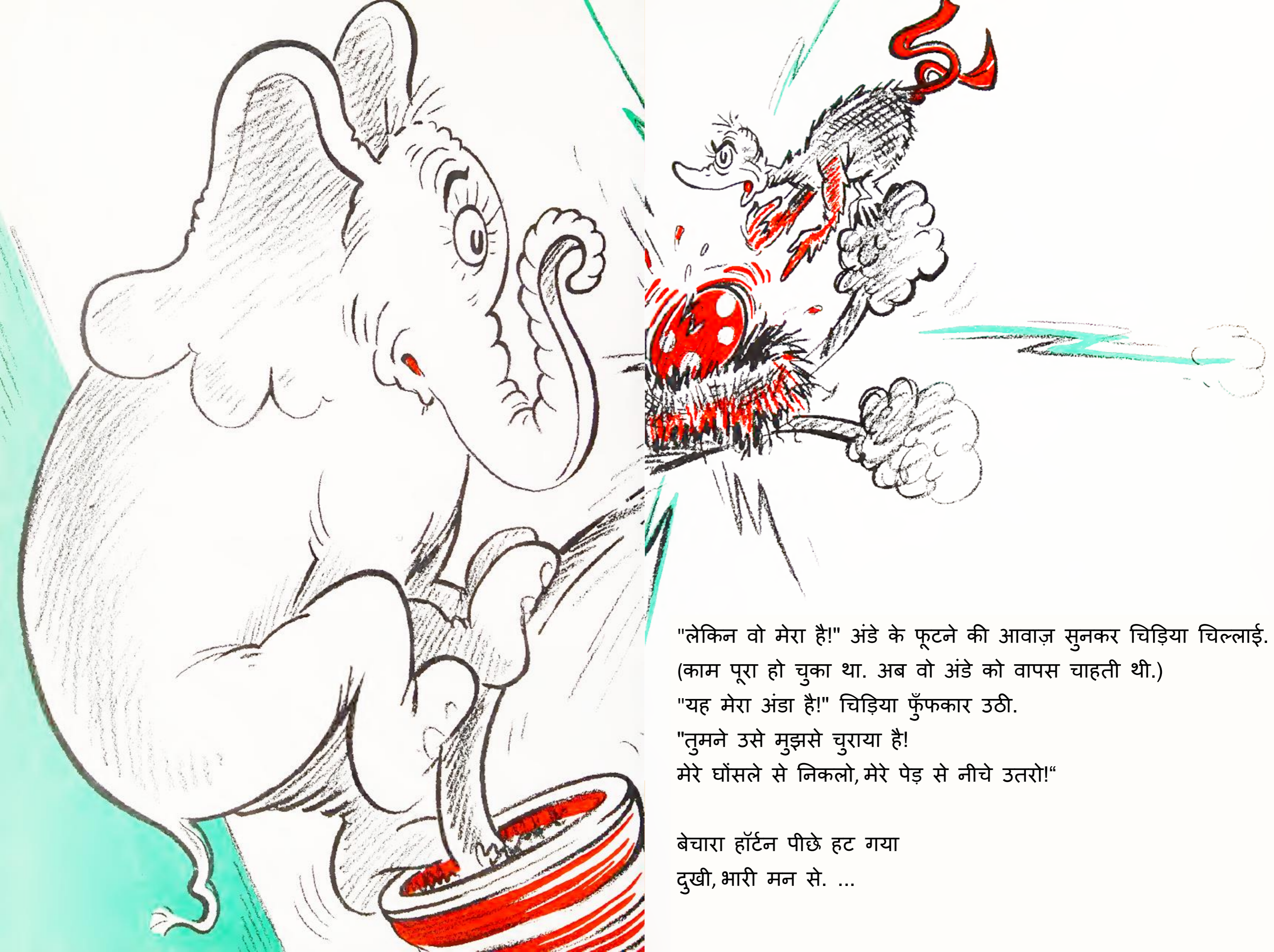
"लेकिन वो मेरा है!" अंडे के फूटने की आवाज़ सुनकर चिड़िया चिल्लाई.
(काम पूरा हो चुका था. अब वो अंडे को वापस चाहती थी.)
"यह मेरा अंडा है!" चिड़िया फुँफकार उठी.
"तुमने उसे मुझसे चुराया है!
मेरे घोंसले से निकलो, मेरे पेड़ से नीचे उतरो!“

बेचारा हॉर्टन पीछे हट गया
दुखी, भारी मन से. ...

लेकिन उसी क्षण अंडा फूट गया!
लाल और सफेद टुकड़ों में,
उस अंडे में जिस पर वह इतनी देर तक और
इतनी अच्छी तरह बैठा रहा,
हॉर्टन हाथी ने कुछ हलचल देखी!
उसके कान थे
और एक पूँछ
और एक सूंड बिल्कुल उसके जैसी थी!
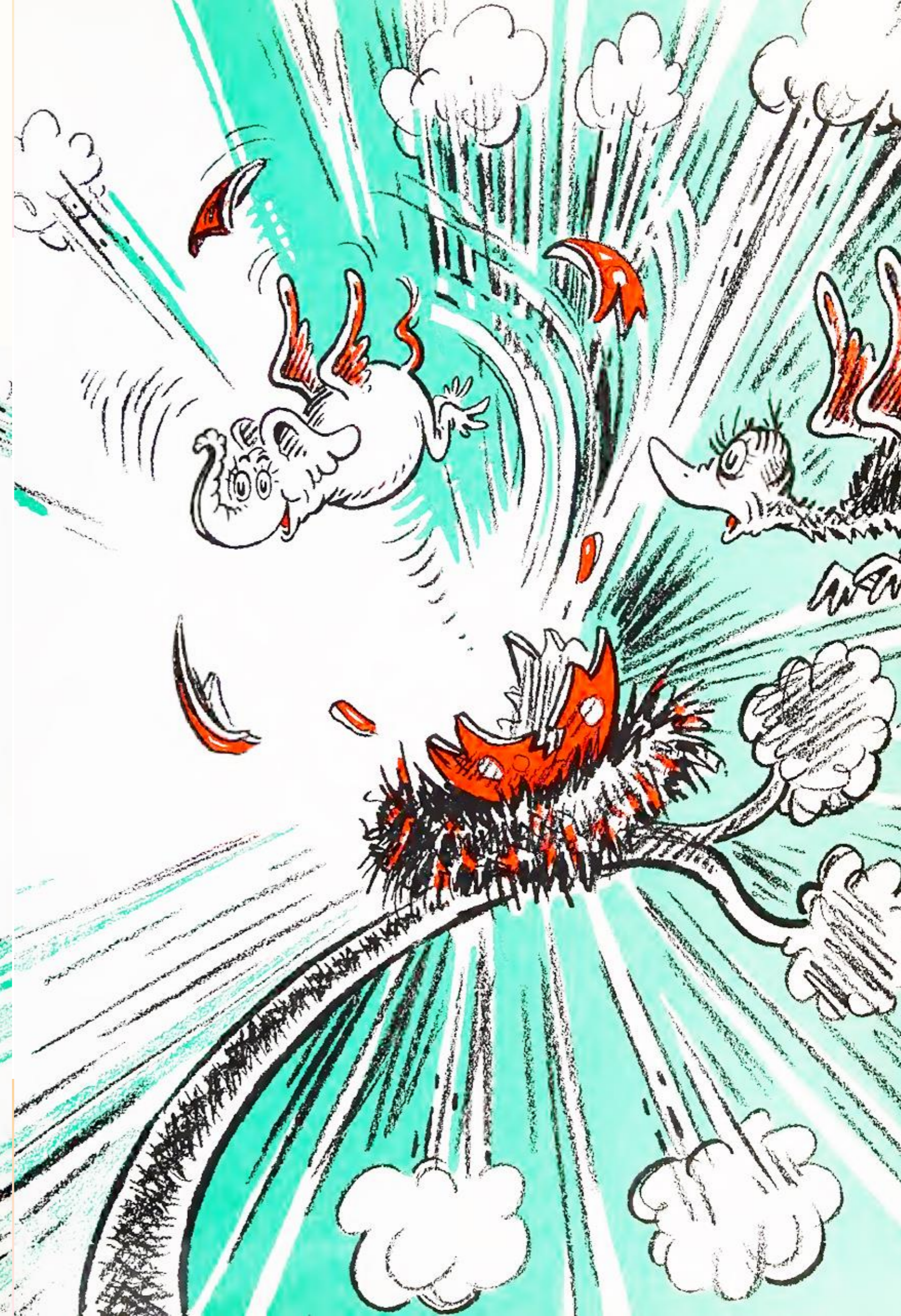
फिर लोग चिल्लाये, 'यह सब क्या है...?'
उन्होंने देखा!
और वे अपनी आँखें फाड़कर-फाड़कर देखते रहे!
फिर वे जय-जयकार करने लगे
और अधिक ज़ोर से जय-जयकार करने लगे.
उन्होंने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा था!
"हे भगवान! मेरे दयालु!" लोग चिल्लाए.
हे भगवान!
यह बच्चा बिल्कुल नया है!
वो एक हाथी-पक्षी है!!
और वैसा होना ही चाहिए,
वैसा ही होना चाहिए, वैसा ही होना चाहिए!
क्योंकि हॉर्टन वफादार था!
वो बैठा रहा! वो बैठा रहा!
और उसने वही कहा, जो उसे कहना था....
हाथी हमेशा वफादार होता है
एक सौ प्रतिशत!"

...और फिर उन्होंने उसे घर भेज दिया खुश,
एक सौ प्रतिशत!